प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के स्रोत

प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए दो प्रकार के स्रोत उपलब्ध हैं, साहित्यिक तथा पुरातात्विक। वस्तुतः प्राचीन भारत के अध्ययन के स्रोत के रूप में साहित्यिक स्रोत की सीमा को स्पष्ट करते हुए, ऐसा कहा गया है कि प्राचीन भारत के लोगों में ऐतिहासिक बुद्धि का अभाव था। प्राचीन ग्रंथ मिथकों से भरे पड़े हैं। प्राचीन भारत के लोग समय की गणना रैखीय रूप से न करके वृत्ताकार रूप से करते थे। अतः ऐसा माना गया है कि भारत में इतिहास लेखन इस्लाम की शानदार धरोहर रहा है।

फिर भी ऐसा मानना तर्कसंगत नहीं है कि प्राचीन भारत के लोगों में पर्याप्त ऐतिहासिक बुद्धि का अभाव था। गौर से देखने पर पता चलता है कि प्राचीन भारत के लोगों की इतिहास विषयक संकल्पना अलग थी। प्राचीन भारत के लोग घटनाओं में अर्थधारण सम्बन्ध नहीं देखते थे। वस्तुतः इनके लिए लेखन का क्या महत्व था वह महाभारत जैसी रचनाओं में ~~अभिव्यक्त~~ अभिव्यक्त हुई है। इनके लिए लेखन का उद्देश्य चार पुरुषार्थों को प्राप्त करना था। यही वजह है कि प्राचीन काल के लेखक हेरोडोटस और सिसि जैसे विद्वानों की रचनाओं की कसौटी पर नहीं रखी जानी चाहिए।

अध्ययन के स्रोत के रूप में साहित्यिक ग्रंथों को निम्नलिखित समूहों में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है। देशी साहित्य और विदेशी साहित्य।

देशी साहित्य को भी दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। (1) धार्मिक साहित्य (2) गैर धार्मिक साहित्य। फिर धार्मिक साहित्य को भी कई उप-समूहों में बांटा जा सकता है। उदाहरण के लिए ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन साहित्य।

ब्राह्मण साहित्य — चार वेद जैसे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इन वेदों से संबंधित ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, 6 वेदांग जैसे- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष। मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति तथा पराशर स्मृति, 18 पुराण, रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य।

Scanned with CamScanner

बौद्ध साहित्य — सुत्त पिटक, विनय पिटक, अभिधम्म पिटक, दीघनिकाय, अशोकावदान, दीपवंश और महावंश, दिव्यावदान, आर्यमंजुश्रीमूलकल्प, जातक ग्रंथ आदि।

जैन साहित्य →

कल्पसूत्र, भद्रबाहु चरित, भगवती सूत्र, परिशिष्टपर्वन इत्यादि।

गैरधार्मिक साहित्य →

प्रमुख गैरधार्मिक साहित्य के रूप में हम, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस, तथा देवीचन्द्रगुप्तम, शूद्रक कृत मृच्छकटिकम, सोमदेव कृत कथासरित सागर, क्षेमेन्द्र कृत वृहत कथा मंजरी, कालीदास कृत मालविकाग्निमित्रम, रघुवंशम, ~~इत्यादि~~ ~~ग्रंथों को~~ बाणभट्ट की हर्षचरित इत्यादि ग्रंथों को रख सकते हैं। * संगम साहित्य इत्यादि।

विदेशी साहित्य →

विदेशी साहित्य में मुख्य रूप से यूनानी तथा रोमन लेखकों ~~की रचना~~ में हेरोडोटस, कर्टियस, मेगास्थनीज, जस्टिन, निर्याकस, प्लीनी, स्ट्रैबो, एरियन, डायोडोरस इत्यादि की रचनाओं को लिया जा सकता है। चीनी लेखकों में फाह्यान, ह्वेनसांग, इत्सिंग इत्यादि की रचना भी महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इसी क्रम में अरब लेखकों में अल-मसूदी, सुलेमान तथा अलबेरूनी का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

अध्ययन स्रोत के रूप में जब हम साहित्यिक साक्ष्यों का विश्लेषण करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि हाल के कुछ दशकों में साहित्यिक साक्ष्य के विश्लेषण में कई नवीन तकनीक का विकास हुआ है। प्रथम, साहित्यिक साक्ष्यों का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन आरंभ हो गया है। दूसरा, साहित्यिक ग्रंथों का अध्ययन अंतरानुशासनात्मक दृष्टिकोण को अपनाया जाने लगा है। दूसरे शब्दों में किसी साहित्यिक ग्रंथों की स्तर-विन्यास को स्पष्ट करने के लिए भाषा-विज्ञान तथा कम्प्यूटर का उपयोग किया जाने लगा है।

Scanned with CamScanner

किन्तु परिक्षण करने पर ऐसा ज्ञात होता है कि अध्ययन स्रोतों के रूप में साहित्यिक स्रोतों की अपनी सीमा भी रही है। साहित्यिक ग्रंथों के विश्लेषण में प्रमुख समस्या उभरती है, ग्रंथों की प्रमाणिकता की। अर्थात पहले पता करना कठिन हो जाता है कि कौन-सा ग्रंथक किस काल का है। इन साहित्यिक ग्रंथों की एक दूसरी समस्या उभरती है वह है ग्रंथों के स्तरीकरण की, अर्थात किसी भी ग्रंथ में एक बड़ा भाग क्षेपक के रूप में जोड़ा गया हो तो उस अंश को पता करना मुश्किल है। फिर साहित्यिक ग्रंथों में एक प्रकार का धार्मिक पुर्वाग्रह भी उभरता है। उदाहरण के लिए बौद्ध लेखकों ने बौद्ध दृष्टिकोण से ग्रंथों का निरूपण किया तो जैन लेखकों ने जैन दृष्टिकोण से। अंत में विदेशी साहित्य की भी अपनी सीमा है। विदेशी लेखकों को भारतीय परिस्थिति का कम ज्ञान था, अतः उन्होंने अपने ढंग से ग्रंथों को तोड़ा और मरोड़ा है।

यही वजह है कि अध्ययन के स्रोत के रूप में पुरातात्विक साक्ष्यों का अत्याधिक महत्व दिया जाने लगा है। पुरातात्विक साक्ष्य का उपयोग साहित्यिक साक्ष्यों को परिपुष्ट करने के लिए होता है। परन्तु जहां यह परिपुष्ट नहीं करता वहां एक प्रकार का वैकल्पिक दृष्टिकोण देता है। पुरातात्विक साक्ष्यों के पक्ष में कई बातें कही जा सकती है। यह अपने स्वरूप में वस्तु निष्ठ होता होता है। अर्थात स्मारक, भवन, अभिलेख, किले और सिक्के सदियों तक उसी प्रकार बने ~~रहते हैं~~ रहते है। अतः उनके द्वारा दी गयी जानकारी अधिक प्रमाणिक हो सकती है।

फिर इधर पुरातात्विक साक्ष्य के अन्वेषण में नवीन तकनीक का प्रयोग भी किया जाने लगा है। जैसे कार्बन डेटींग, थर्मोलिमा डेटींग इत्यादि। अब पुरातत्व के विश्लेषण में जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, सांख्यिकी, भूगर्भशास्त्र, रसायनशास्त्र आदि के निष्कर्षों का भी उपयोग किया जाता है। फिर ~~पुरातात्विक~~ पुरातत्व के अध्ययन में पर्यावरण के प्रभाव पर भी बल दिया जाता है। उदाहरण के लिए भारतीय उपमहाद्वीप में न केवल प्रथम नगरीकरण के पतन बल्कि द्वितीय नगरीकरण के पतन के अध्ययन में भी पर्यावरणीय कारक पर विशेष बल दिया जाने लगा है। पुरातात्विक स्रोत में निम्नलिखित पर बल दिया जाता रहा है।

Scanned with CamScanner

~~अभि~~ टिले — यह एकल संस्कृति तथा बहुसांस्कृतिक दोनों प्रकार के होते हैं।

अभिलेख :— राजकीय अभिलेख और निजी अभिलेख।

सिक्के, औजार उपकरण, मूर्तिकला, चित्रकला, स्मारक भवन आदि।

फिर विश्लेषण करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि पुरातात्विक स्रोत की भी अपनी सीमाएँ हैं। प्रथम, यद्यपि यह सही है कि पुरातात्विक स्रोत अपने स्वरूप में वस्तुनिष्ठ होता है। दूसरे, ऐसा भी मानना उचित है कि पुरातात्विक साक्ष्य में मानवीय हस्तक्षेप सीमित होता है। लेकिन यदि हम गौर से देखें तो हमें ज्ञात होता है कि अशोक के कई अभिलेख अपने मूल स्थान से हटा दिए गये हैं तथा हड़प्पा में कई भवनों का आकार इसलिए बिगड़ गयी, क्योंकि ईंटों को चोर खोद कर ले गये। फिर अशोक के राजकीय अभिलेख ~~प्रशस्ती~~ प्रशस्ति के रूप में लिखे गए हैं, जाहिर है इसमें तथ्यों को बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया गया है। अंत में हम ऐसा कह सकते हैं कि पुरातात्विक साक्ष्य की एक महत्वपूर्ण सीमा है, भारत में क्षैतिज खुदाई का सीमित होना। चूंकि क्षैतिज खुदायी खर्चीली होती है, अतः यहा लम्बवत खुदायी पर ही बल दिया गया है, परन्तु लम्बवत खुदायी से किसी भी संस्कृति के स्तर एवं काल की सूचना तो मिलती है, परन्तु उस संस्कृति के मध्य सम्पूर्ण जीवन की झलक नहीं मिल पाती। यही वजह है कि हमें भारतीय इतिहास के कई ~~कालो~~ कालों के विषय में स्पष्ट जानकारी नहीं मिल ~~पाती~~ पा सकी है। उदाहरण के लिए क्षैतिज खुदायी के अभाव में हड़प्पा सभ्यता के उत्थान और पतन जैसे मुद्दों पर आज भी अस्पष्टता बनी हुई है।

Scanned with CamScanner